

हृष्टीशु त्र हस्तसन्त्यनिं नमः ॥ ॐ नमः ॥ रुलिर्गं क ना त्या
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ जन्तु य ह्म यै ॥ नि न्या नन्द केनी व नार
 य केनी सो च यो न तो केनी जिह्व ना खिल धा न पा व न
 केनी यु व क मा रु ह्ये नी या स या वे स वं ज पा व न केनी
 का भी य ना घी ह्ये नी रि का द रि क पा वि स म्य न केनी
 मा ना जन्तु य ह्म ह्ये नी ॥ १ ॥ ना ना न त्त वि सि ण ह्ये न के

क २
नीहमा म्यनाउ म्यनी मूका हानविल म्यमाने विनं स द
का ज क म मनी काष्मी ना गु न ला छि ना न यिनी काष्मी
पूना श्रीष्ठनी लि का दहि ॥ २ ॥ योग न न्द केनी नियुक्
य केनी धर्म कनिष्ठा केनी वेन्दा कान न रा स माने न केनी
लेला वन को केनी सर्वेष्ठ य केनी गय रु न केनी काष्मी पू
ना श्रीष्ठनी लि का दहि ॥ ३ ॥ केला ग व स क द ना य केनी

ले त्रिउ मा णं केनी को मानी नि ग मा थ ल व ल केनी उ का
ल वि जा क नी भा क डा न क पा ट पा ट न केनी काष्मी पू ना
श्रीष्ठनी लि का दहि ॥ ४ ॥ दुष्सा दुष्सा वि रु त या व न के
नी उ म्मा लु रु लु द नी ली ना ना ट क मू क न न केनी वि
रु दि या र्क नी धा वि ल्य ण न म ४ य मो द केनी काष्मी पू
ना श्रीष्ठनी लि का दहि क पा विल म्य न केनी माने

चयनं नश्यती ॥ ५ ॥ गुर्वी सर्वज्ञ नश्यती, निलरुनी मा
 ना जने यत्न नश्यती, निनी निल समान वृक्षरुनी, नि
 शाचे दा नश्यती, सो नान चरुनी सदा भी वरुनी काशी
 यनाथी नश्यती रिक्ता दहि ॥ ६ ॥ निने रुनी निनो वृत्ती
 सर्वनी, कामा कांक्षरुनी, सनात्स आदि कांन, समस्त वन्द्य
 नरुनी, गमुय रा वा वृत्ती, काशी नी रिपू नश्यती रिक्ता

२

दहि ॥ ७ ॥ दर्वि स्वर्गु वि रिण न लष रिना, दक्षरु म
 स्तिना, वाभ पाय सं यत्न पाण वि धुना, सो लक्ष्य माद नश्यती
 रुता रिषु रुनी, रुता स से वनी काशी यनाथी नश्यती रिक्ता दहि
 ॥ ८ ॥ वन्द्या कानन का निरु निना, वा ना के वृक्ष नश्यती, वन्द्या का का
 यि समा वृक्ष लयनी, वन्द्या क वि म्वा धनी, नाना पृष्ठ कया शं
 का वृक्षरुनी काशी यनाथी नश्यती रिक्ता दहि ॥ ९ ॥ सर्व गं

नकरी माहालयकरी मागाक्याजं करी साक्षात्माक
 नी निनामयकरी विष्णुव्यत्रीणी धनी रेका नन्दकरी
 काशीयना श्रीव्यत्री रिक्कादहि ॥ १० ॥ अन्नपूर्णासंदाए
 हर्गं करपा होवल्ले हे ग्यानेवेना ग्यसि द्विथिं रिक्का
 नुदहि पाव्वेनि ॥ ११ ॥ ॐ निष्कं करो राया वित्रविगोअ
 नैयूष्म सुवेसमाफ ॥ ॥ समुत्तर २०८ आषाढ कृष्ण ८